Volume-3, No. II, Aug-2016, pp. 55-57

विश्वशान्ति के सन्दर्भ में भारतीय संस्कृति एवम् वैदिक शिक्षा का योगदान

डा. वीरेन्द्र कुमार (अस्सिटेंट प्रोफसर) शिक्षा विभाग
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कालिज अनूपशहर बुलन्दशहर उत्तर–प्रदेश भारत।

सार

विश्व में अनेक देश अन्तर्भूत हैं, प्रत्येक देश में अनेक प्रदेश, जनपद, महानगर, नगर एवं ग्राम अवस्थित हैं। विश्व को ही जगत् भी कहा जाता हैं। इस जगत में चराचर प्राणियों का समूह विद्यमान है, इन चराचर प्राणियों में मनुष्य को सर्वोत्तम माना गया है। मानव में मानवोचित गुण होना आवश्यक है इसके बिना मानव मानव नहीं रह जाता है, आज के भौतिकतावादी युग के प्रभाव से लोग अशान्त हैं। परिणामतः सम्पूर्ण विश्व में अशान्ति का वातावरण बना हुआ है। सर्वत्र त्राहि–त्राहि मची हुई है। प्रायः सर्वत्र असुरक्षा की भावना बलवती हो गयी है, प्राकृतिक पर्यावरण प्रदूषित होकर असन्तुलित हो गया है। मानवमात्र धीरे–धीरे कर्तव्या कर्तव्य, सत्यासत्य के विवेक से विरत हो रहा है। जिससे जीवन मूल्यों में, ह्रास हो रहा है। मानवीय मूल्यों की प्राप्ति भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा से सम्भव है। यहाँ लोग कुटुम्ब में रहकर जीवन जीने की कला सीखते हैं, अपने कुल, परस्परा, संस्कृति की मर्यादा का पालन करते हैं। भारतीय संस्कृति में बेटी एक व्यक्ति की बेटी न होकर सम्पूर्ण गाँव की बेटी मानी जाती है। यहाँ सर्वत्र बड़ों को सम्मान एवं छोटों का स्नेह सुलभ होता है। हमारे वेदों, पुराणों उपनिषदों, महाभारत, रामायण आदि सद्ग्रन्थों में जगत् कल्याण की बात की गयी है गीतागायक श्रीकृष्ण ने कर्म का उपदेश दिया है, महाभारत ने शान्ति का सन्देश दिया है। रामायण मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम के जीवन चरित्र को संजोकर मानवमात्र को सदाचरण की शिक्षा प्रदान करता है।

मुख्य शब्द– शान्ति, अशान्ति, कर्तव्यबोध, त्यागभाव, भारतीय संस्कृति, विश्वबन्धुत्व, धर्म के लक्ष्ण, कर्मवाद।

आज पूरे विश्व मे विभिन्न स्थानों पर हिंसा एवं अशान्ति का नग्न तांडव दिखाई दे रहा है। अपने देश में भी कहीं बोडो उग्रवादी, तो कहीं उल्फा, तो कहीं जैशे मुहम्मद, तालिबान, लशकर, नक्सलवाद आदि के द्वारा प्रायोजित आतंकवाद दृष्टिगोचर हो रहा है। इस प्रकार सर्वत्र अशान्ति दिखाई दे रही है। इस समय विश्वशान्ति की आवश्यकता को देखते हुए पूरा विश्व भारत की ओर दृष्टिपात कर रहा है। ऐसी परिस्थिति में भारतीय संस्कृति एवं वैदिक शिक्षा विश्वशान्ति की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं ऐसा प्रतीत होता है। इस समय हमारे सामने वेदों का यह सन्देश सामने आता हैः–

ओं द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षंशान्तिः पृथिवी शान्तिः आपः शान्तिः ओषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिः विश्वे देवाः शान्तिःब्रह्मशान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्ति, सामाः शान्तिरेधि।।

इस मन्त्र में पृथिवी, द्युलोक, अन्तरिक्ष, औषधि, वनस्पति, जल, विश्वेदेव, ब्रह्म और सर्वत्र शान्ति की कामना की गई है।

भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत धर्म जो कर्त्तव्यपरक है, इसके साथ सत्य, अहिंसा, त्याग, सेवा भावना और अध्यात्मवाद का समावेश किया जाता है। हमारे देश में अनेक जाति, धर्म एवं विभिन्न भाषाओं के लोग रहते हैं, किन्तु सभी लोग अनेक होते हुए भी भारतीय होने के कारण एक हैं। विश्व के देशों में अशान्ति का कारण पहले ढूंढना होगा, तभी विश्वशान्ति का मार्ग निकलेगा। विश्व में जाति वर्ग धर्म को लेकर तथा स्वार्थवाद के कारण अशान्ति है। इस अशान्ति को दूर करने के लिए भारत की भारतीय संस्कृति जहाँ हमें कर्तव्यबोध कराती है, वहीं वेद आदि शास्त्र हमें कर्मवाद एवं त्यागभाव की शिक्षा देते हैं। यजुर्वेद का यह मन्त्र–

ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।।
(यजुर्वेद 40/1 तथा ईशः उपनिषद्)

त्यागभाव से वस्तुओं के उपभोग की शिक्षा देता है। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में ''सिया राममय सब जग जानी''। संसार ब्रह्ममय है। सब कुछ उसका है। हम प्रसाद रूप से उसके द्वारा प्रदत्त सामग्रियों का उपभोग करें। त्यागभाव विश्वशान्ति की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके अतिरिक्त अहिंसा (''अहिंसा परमो धर्मस्त्वधर्मः प्राणिनां वधः''– मनुस्मृति) (आत्मनः प्रतिकूलानि न परेषां समाचरेत्– मनुस्मृति) अर्थात् मनु का यह सन्देश एवं शिक्षा मन वचन कर्म से हिंसा– किसी का अहित नहीं करना, जो अपने अनूकूल न हो वह व्यवहार किसी दूसरे के साथ न करें– हमें विश्वशान्ति की ओर ले जाती हैं। अब मैं निम्नाकिंत बिन्दुओं पर विचार करूंगा–

1. धर्म या कर्त्तव्य
2. कर्मवाद
3. त्यागभाव
4. सत्य एवं अहिंसा
5. बडों का आदर, श्रद्धा एवं भक्ति
6. विश्वबन्धुत्व भावना से विश्वशान्ति
7. साम्यवाद
8. सर्वांगीण अभ्युदय
9. सबका साथ सबका विकास

1. धर्म या कर्त्तव्य–

'धर्म' शब्द कर्त्तव्य अर्थ का बोध कराता है। क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए? क्या ठीक है और क्या गलत है? यह ज्ञान ही धर्म है। धर्म का लक्षण मनुस्मृति में इस प्रकार है–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।
(मनुस्मृति 7/12)

अर्थात् धृतिः– धैर्य, क्षमा–माफ करना, दम– काम क्रोध आदि का दमन, अस्तेय–चोरी नकरना, शौच–पवित्रता, इन्द्रियनिग्रह– इन्द्रियों पर विजय होना, धी–बुद्धि यानी ठीक एवं गलत क्या है यह सोचने की शक्ति, सत्य, अक्रोध– क्रोध न करना ये दश लक्षण धर्म के हैं। ये एक एक तत्त्व अशान्ति को दूर कर विश्वशान्ति स्थापित करने में सक्षम है। यदि मनुष्य ठीक क्या है? गलत क्या है यह सोचकर कार्य करेगा तो संघर्ष नहीं होगा। अक्रोध–क्रोधाभाव यह हिंसा को रोकेगा। अस्तेय से भ्रष्टाचार बन्द होगा तो देश की उन्नति होगी। क्षमा और दम से भी अशान्ति दूर होगी। मनु तो शुद्ध आचरण को ही धर्म मानते हैं–

आचारः परमो धर्मः।। (मनुस्मृति 6/108)

2. कर्मवाद

वेदों का यह सन्देश है कि कर्म करते हुए हम सौ वर्षों तक जीवित रहें। यजुर्वेद का यह मन्त्र–

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजिविषेच्छतं समाः।
एवन्त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।
(यजुर्वेद 40/2)

बतलाता है कि कर्मयोग के अतिरिक्त कोई भी दूसरा मार्ग नहीं है। अकर्मण्यता पाप एवं अभिशाप है। भगवद्गीता के अनुसार निष्काम कर्म योग श्रेष्ठ है। फल की चिन्ता किये बिना मनुष्य अपना कर्म करे। क्योंकि अपना अधिकार केवल कर्म में है फल में नहीं। मनुष्य आशक्ति को छोडकर कर्म करे। जैसा कि भगवद्गीता में कहा है–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भू मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।
योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।।

इस प्रकार यह निष्काम कर्मयोग हमें कर्मण्यता और आशावाद का सन्देश देते हुए बतलाता है कि कर्म ही जीवन है। यदि मनुष्य आसक्तिरहित निर्धारित कर्म करता चला जाये तो भी अशान्ति नहीं होगी।

3. त्यागभाव–

वैदिक शिक्षा में त्यागभाव का विशेष महत्त्व बतलाया गया है। यजुर्वेद का ''ईशावास्यमिदम्'' इत्यादि मन्त्र बतलाता है कि संसार के पदार्थों का उपभोग त्यागभाव से करना चाहिए। यहाँ पदार्थों के उपयोग का निषेध नहीं है किन्तु भोग लिप्सा का निषेध है। यह वेदमन्त्र त्यागभाव का संकेत करते हुए मानवमात्र को अशान्ति से शान्ति की ओर ले जाता है। गीता में बताया गया है कि मनुष्य कर्म फलों का त्याग कर कर्म करने का प्रयत्न करें। जो मनुष्य शुभ मिलने पर खुश नहीं होता अशुभ मिलने पर दुःखी नहीं होता, कभी द्वेष नहीं करता, शुभ, अशुभ दोनों प्रकार के फलों का त्याग करता है और भक्तिमान् है, वही परमेश्वर को प्रिय है। (द्रष्टव्य गीता 12/11/17)

प्रो. मैक्समूलर वैदिक त्याग भाव का समर्थन करते हुए कहते हैं कि भारत में मानवीय चिन्तन शक्ति अपने सर्वोच्च शिखर पर आरूढ हो गयी है, जिसके आगे कुछ और है ही नहीं। वस्तुतः आर्थिक जगत् की समस्याओं के समाधान का मूल सिद्धान्त यही है।

श्री गोल्डस्मिथ मानते हैं कि ''जहाँ कुछ स्थानों में धन की अधिकता होती है, वहाँ मानवता का पतन होता है और राष्ट्र विनाश के गड्ढे में गिर जाता है। इस प्रकार वैदिक त्याग भाव का महत्त्व स्पष्ट ही है कि यही विश्वशान्ति की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

4. सत्य एवं अहिंसा

वेदों में ''सत्यं वद, धर्म चर'' (तैत्तिरीयोपनिषद् 1/11/1–4) के द्वारा सत्य एवं धर्म आचरण की शिक्षा दी गयी है। वहीं मनुस्मृति में ''सत्यान्नास्ति परो धर्मः'' और ''अहिंसा परमो धर्मस्त्वधर्मः प्राणिनां वधः'' के द्वारा सत्य एवं अहिंसा को परम धर्म बताया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सत्य एवं अहिंसा रूपी अस्त्र के द्वारा भारतवर्ष को अंग्रेजों से स्वतन्त्र करवाया। यदि झूठ फरेब और भ्रष्टाचार को छोड अहिंसा को अपना लिया जाये तो आतंकवाद, अशान्ति दूर होंगे, देश की उन्नति होगी और विश्व में शान्ति स्थापित कर सकेंगे।

5. बडों का आदर श्रद्धा एवं भक्ति

भारतीय लोगों के हृदयों में महान् लोगों, गुरूजनों और वृद्ध लोगों के प्रति आदर श्रद्धा एवं कृतज्ञता का भाव तथा भक्ति बहुतायत से दिखायी देते हैं। मनु कहते हैं कि जो नित्य बडे बूढों की सेवा करता है उन्हें नमस्कार करता है उसकी आयु, विद्या, यश एवं बल की वृद्धि होती है–

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।
(मनुस्मृति 2/21)

भारतीय लोग आज भी वशिष्ठ गौतम कणाद आदि महर्षियों विदुर चाणक्य आदि नीतिमान् राजनीतिज्ञों तथा विविध स्वतन्त्रता सेनानियों का सम्मान करते हैं। राम कृष्ण और बुद्ध तो श्रद्धावश उन्होनें भगवान् का अवतार ही मान लिया है। शास्त्रों के निम्नांकित वचन

वृद्धान् नमत।। (तैत्तिरीयोपनिषद्)
मातृदेवो भव पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव।। (तैत्तिरीयोपनिषद् 7/2)

बतलाते हैं कि भारतीय लोगों के हृदय में वृद्धों, माता, पिता, गुरू (आचार्य) के प्रति आदर श्रद्धा एवं विनय की भावना मौजूद है। इस प्रकार माता पिता गुरू के आदेश पालन सेवा और वृद्धों के सम्मान शिष्टाचार का भी उपदेश दिया गया है। इस प्रकार वृद्धसम्मान श्रद्धा एवं भक्ति भी विश्वशान्ति के विकास में अपना योगदान कर सकते हैं।

6. विश्वबन्धुत्व–भावना से विश्वशान्ति

वैदिक शिक्षा में विश्वबन्धुत्व की भावना का विशेष महत्त्व है। यह विषमता को दूर करने और विश्वशान्ति की ओर बढने का सन्देश है।''श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः'' (अथर्ववेद 19/35/1/15/6) के द्वारा मानवमात्र को परमेश्वर का पुत्र कह दिया गया। '' अभयं मित्रादभयममित्रात्'' (यजुर्वेद 36/18) में सभी दिशाओं को मित्र कहा गया कि हमें शत्रु मित्र किसी से भी डर न लगे। आगे ''मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि'' (अथर्ववेद 3/30/3) इस वेदमन्त्र के द्वारा कहा गया कि मै मित्र की दृष्टि से समस्त प्राणियों को देखता हूँ।'' मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन'' (ऋग्वेद 10/191/11) इस मन्त्र में वेद ने कहा है कि परमेश्वर के सभी पुत्र भाई बहन आपस में द्वेष न करें।

7. साम्यवाद

साम्यवाद के अन्तर्गत सबके कल्याण की भावना निहित है। वेदों का सन्देश है–

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।।
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

यहाँ वेद सभी मनुष्यों में साथ चलने विचार सभा समिति हृदय सर्वत्र समानता सामंजस्य का उपदेश करते हैं। गीता में भी ''समत्वं योग उच्यते'' (गीता 2/48) के द्वारा समन्वय/साम्यवाद की प्रतिष्ठा दिखाई पडती है।

8. सर्वांगीण अभ्युदय

वैदिक शिक्षा का आठवां गुण है सर्वांगीण अभ्युदय समान रूप से सभी को चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पाने का अधिकार है। धर्म वैदिक संस्कृति का मौलिक सिद्धान्त है और मोक्ष वैदिक शिक्षा का मूलतत्त्व है। भारतीय संस्कृति का मौलिक सिद्धान्त है और मोक्ष वैदिक शिक्षा का मूल तत्व है। भारतीय संस्कृति एवं वैदिक शिक्षा मनुष्य मात्र को ऐहिक एवं पारलौकिक उन्नति के साथ साथ व्यक्तिगत जीवन में भी शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का अधिकार देते हैं। निम्न वेद मन्त्र में प्रार्थना की गयी है कि हमारे कष्टों को दूरकर जो भद्र का कल्याण कारक मार्ग है हमें प्राप्त कराइये–

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव।। (यजुर्वेद 30/30)

अनेक वेदमन्त्रों में प्रार्थना की गयी है कि हम सूर्य चन्द्र के समान कल्याणकारक मार्ग पर चलें, असत् से सत् की ओर चलें, अन्धकार से प्रकाश की ओर चलें, मृत्यु से अमृत की ओर चलें। हम हमेशा भद्र सुने और भद्र देखें।

इस प्रकार वेद सब का सर्व प्रकार से अभ्युदय के विचार द्वारा विश्वशान्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

9. सबका साथ सबका विकास

वेदों का सन्देश है कि सभी का कल्याण हो सभी का विकास हो। यहाँ कहीं भी भेदभाव नहीं है। सभी लोग भद्र ही देखें भद्र ही सुने यही कामना है। इसीलिए माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्रमोदी जी ने नारा दिया सबका साथ सबका विकास। वह बराबर समानो मन्त्रः समितिः समानी मन्त्र का उच्चारण करते रहते हैं। संस्कृत में एक सूक्ति है–सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्। अर्थात् सभी सुखी हों, सभी भद्र देखें सभी नीरोग हों और कोई भी दुखी न रहे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि विश्व के समस्त लोगों के स्वस्थ एवं सुखी होने की उदात्त भावना जो वेदों की देन है, विश्व से अशान्ति, हिंसा एवं आतंकवाद को जड़ से खत्म कर विश्वशान्ति की स्थापना करने में सफल होगी ऐसा मेरा विश्वास है।

संदर्भ–

1. यजुर्वेद 40/1
2. ईशः उपनिषद्
3. मनुस्मृति 7/12
4. मनुस्मृति 6/108
5. यजुर्वेद 40/2
6. द्रष्टव्य गीता 12/11/17
7. तैत्तिरीयोपनिषद् 1/11/1–4
8. मनुस्मृति 2/21
9. तैत्तिरीयोपनिषद्
10. तैत्तिरीयोपनिषद् 7/2
11. अथर्ववेद 19/35/1/15/6
12. अथर्ववेद 3/30/3
13. ऋग्वेद 10/191/11
14. गीता 2/48
15. यजुर्वेद 30/30